Research Journal of Language, Literature and Humanities
Vol. **1(1),** 4-5, January **(2014)** *Res. J. Language, Literature and Humanities*

चिर ऊर्जा के प्रतीक स्वामी विवेकानन्द

कान्ति पचौरी
रसायन शास्त्र विभाग, शासकीय निर्भय सिंह पटेल विज्ञान महाविद्यालय, इन्दौर, मप्र, भारत

Available online at: www.isca.in, www.isca.me
Received 3rd January 2014, revised 13th January 2014, accepted 19th January 2014

Abstract

स्वामी विवेकानन्द भारतीय दर्शन, धर्म, संस्कृति, देशप्रेम और विश्व बंधुत्व की जीवंत प्रतिमा थे, जिन्होंने विश्व में गहन आध्यात्मिकता और मानव मूल्यों के भारतीय दर्शन की स्थापना की।

Keywords: **चिर, ऊर्जा, प्रतीक, स्वामी विवेकानन्द.**

प्रस्तावना

स्वामी विवेकानन्द भारतीय दर्शन, धर्म, संस्कृति, देशप्रेम और विश्व बंधुत्व की जीवंत प्रतिमा थे, जिन्होंने विश्व में गहन आध्यात्मिकता और मानव मूल्यों के भारतीय दर्शन की स्थापना की। युवा नरेन्द्र अपने गुरू स्वामी रामकृष्ण परमहंस की उस रहस्यमयी ऊर्जा के समन्वय थे, जो भारतीय ऋषियों ने युगों से विश्व विरासत की उदात्त भावना के परिपेक्ष्य में अपने शिष्यों को विरासत में दी है। ऊर्जा और अध्यात्म धर्म और समाज संस्कृति और समन्वय का ऐसा उदाहरण विश्व इतिहास में ही नहीं मिलता जो स्वामी जी के विराट व्यक्तित्व में समाहित रहा है।

4 जुलाई 1902 को यह युवा ऊर्जा उसी विश्व पटल पर अपनी अमिट छाप छोड़ कर परम तत्व में लीन हो गई और दे गई विश्व को ऐसी अमर धरोहर जो युगों युगों तक विश्व को केवल मार्गदर्शन करती रहेगी। ऐसे व्यक्तित्व सार्वभौमिक सर्वकालिक और कालजयी है, जो ''वसुधैव कुटुम्बकम'' की उदात्त भावना से मानव मात्र के कल्याण के लिए अवतरित होते हैं। उनका निर्वाण भी एक अलौकिक घटना थी, जब 9 जुलाई 1902 की सुबह 9.10 बजे पर उन्होंने देह त्याग कर ध्यान में रहते हुए ''महा समाधि'' में प्रवेश किया।

स्वामी विवेकानन्द ने मात्र 38 वर्ष की आयु में विश्व भ्रमण कर 11 सितम्बर 1893 के Parliament of Religions में शिकागो में उद्बोधन दिया, वह हमेशा विश्व इतिहास की धरोहर रहेगा, जिसमें उन्होंने My American brothers and sisters सम्बोधन से प्रारंभ कर अपनी और भारतीय संस्कृति की महान परम्परा को प्रमाणिक रूप से विश्व के सामने रखकर वास्तव में धर्म के प्रति विश्व चेतना को झकझोर कर धर्म के वास्तविक मूल्यों की स्थापित किया। यह उद्बोधन गरीबी, शोषण, गुलामी और अज्ञान की जंजीरों में जकड़े तत्कालीन भारत की उस असीम ऊर्जा का एक अंश था, जिसमें मानवीय मूल्यों, आदर्शों और समन्वय की उदात्त भारतीय परम्परा को पहली बार सारगर्भित रूप में विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया। स्वामीजी की अल्प आयु में इस विराट विद्वत्ता को देख कर सारा विश्व, विशेष कर पश्चिम का तथाकथित अभिजात्य वर्ग हतप्रभ रहा है।

स्वामी विवेकानंद का दर्शन भारत को उसके पुरातन मूल्यों से अवगत करा कर विश्व गुरू के रूप में स्थापित करने का अतुलनीय प्रयास था। उन्होंने अनेक देशों में भ्रमण कर अपने जीवन दर्शन, धर्म, अध्यात्म के ज्ञान से पश्चिम के विचारों को और विद्वानों के बीच उपेक्षित और निम्नतर समझे जाने वाले भारत की कीर्ति ध्वजा विश्व भर में स्थापित की। पूरे भारत का भ्रमण कर उन्होंने सामाजिक कुरीतियों, अज्ञान, अशिक्षा, नारी उत्पीड़न, परतंत्रता जैसे समकालिक विषयों पर अपनी ओजस्वी वाणी से जनमानस में नई चेतना और ऊर्जा का संचार किया, जिसकी परिणिति आगे भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में भी देखने को मिलती है। कविवर रवीन्द्र ने प्रसिद्ध फ्रेंच उपन्यासकार रमण रॉलेन से कहा था "If you went to know India study Vivekanand" स्वामी के विराट व्यक्तित्व को नमन करता यह वक्तत्व विश्व की दो महान विभूतियों का उनके प्रति असीम सम्मान का परिचालक है।

उनकी अलौकिक वाक्शक्ति ने उन्हें एक प्रभावशाली वक्ता, कवि, लेखक और चिंतक के रूप में स्थापित किया। ''बर्तमान भारत'' उनका प्रसिद्ध बंगाली निबंध 1899 में उद्बोधन नामक बंगाली पत्रिका में प्रकाशित हुआ तथा उनके निबंधों का संग्रह 1905 में पुस्तक के रूप में संग्रहित है। अपने जीवनकाल में उन्होंने अनेक ग्रंथों की रचना की, जिनमें कर्मयोग (1896), राजयोग, वेदान्त फिलोसफी (सभी 1896), Vedanta Philosophy (all 1897), My master (1901 the baker and Taylor copy New Yark), Lecturer ज्ञान योग (1902) आदि प्रमुख हैं। उनके देहावसान के बाद उनकी भिन्न कृतियां प्रकाशित हुईः i. Bhakti Yoga, ii. The east and the west, iii. Inspired talk, iv. Narad bhakti sutra (अनुवाद), v. Lecture for Colombo to Almona (1904), vi. Para (पराभक्ति) or supreme devote, vii. Practical Vedanta, viii. Raj Yoga (1920) उनकी रचनाएं तथा भाषण खण्डों में वृहद रूप में प्रकाशित हैं।

एक कमंडल, दो वस्त्र एक मृगछाल धारण करने वाला युवा संन्यासी विश्व को इतनी सम्पत्ति दे गया है, जिससे युगों युगों तक भावी पीढ़ियां आलोकित होती रहेंगी। अक्टूबर 1892 में पहली बार पूना में लोकमान्य तिलक की स्वामीजी से भेंट हुई जो इतने प्रभावित हुए कि उन्हें 10 दिनों तक अपने घर ले गये। स्वामीजी ने अपने समकालीन मनीषियों के बीच इस तरह अपनी एक अलग अमिट छाप छोड़ी। प्रसिद्ध विचारक मिलर ने लिखा है

Vivekanand was advent that services should be perfumed without attachments to the final results. This was social servies became Karma Yoga that ultimately brings special benifits to the server not to those being served. Mahatma Gandhi us fy[kk & He maintained the Hindu religion in a state of splender of cutting dead wood of traditions" राजयोग पर अपने संभाषणों में उन्होंने कहा "Take up on idea make that idea your life think of it dream of it, live a that idea. Let the brain muscles nerves every part of your body be full of that idea and just leave every idea alone. This is the way to success that is the way great spritual giants are produced."

1893 से 1897 के बीच उन्होंने Japan, China, Canada और अमरीका की यात्राएं की – अमेरिका की हार्वर्ड यूनीर्सिटी में अनेकों उद्बोधन के बाद

प्रोफेसर जॉन हेनेरी राइट ने कहा – "To ask for your creadentials is like asking the sun to state its right to shine in the heaven." उन्होंने भारत की चारों दिशाओं में भ्रमण किया और व्यक्तिगत रूप से देश की स्थिति, विविधता, संस्कृति, धर्म, नीति, कुरीतियां आदि का विस्तृत अध्ययन मनन करने के बाद अपने संन्यासी होने की घोषणा की। भारतीय दर्शन, वेदान्त, मीमांसा, उपनिषद्,गीता आदि भारतीय सांस्कृतिक उपलब्धियों का उन्होंने वृहद् अध्ययन किया जो बाद में उनके उद्बोधन और दर्शन में निरंतर निखरता गया। स्वामी रामकृष्ण परमहंस से 1881–1882 तक (मृत्यु 16 अगस्त 1886) तक जो गुरू की कृपा की अनवरत वर्षा उन पर हुई उसी ने उन्हें नरेन्द्र से विवेकानन्द बनाया। (जन्म 12 जनवरी 1863 कलकत्ता) भारतीय दर्शन के साथ ही उन्होंने पाश्चात्य साहित्य और दर्शन का भी गहन अध्ययन किया। उनकी मृत्यु अद्भुत प्रतिमा और स्मरण शक्ति से उन्हें विद्वानों ने उन्हें श्रृतिधारा अर्थात् अप्रतिम प्रतिभा का धनी कहा है। बेलूर मठ में अपने गुरू स्वामी रामकृष्ण परमहंस के देहावसान के बाद उन्होंने रामकृष्ण मिशन की स्थाना की जो अनवरत कार्यरत है। युवा पीढ़ी के लिए स्वामीजी का नारा "Arise awake and step not till the goal it achieved" अमर संदेश है। विश्व और विशेषकर भारत की वर्तमान राजनैतिक, सामाजिक, शैक्षणिक, अर्थिक, सांस्कृतिक, साम्प्रदायिक स्थितियों के निराकरण और समस्याओं से निकलकर प्रकाष और चेतना के नये युग में प्रवेश के लिए स्वामी विवेकानन्द का जीवन दर्शन वैश्विक स्तर पर मानवता का मार्गदर्शन करता रहेगा। भारत भूमि ऐसे विलक्षण मनीषीयों से हमेशा आलोकित रही है और यही हमारी अजर अमर धरोहर और विश्व समुदाय को देन है।

निष्कर्ष

स्वामी विवेकानंद ने भारतीय संस्कृति, वेदान्त, अध्यात्म योग के समन्वय से समाज के नैतिक, शैक्षणिक, सामाजिक परिवेश के उत्थान के लिए एक कर्मठ एवं ऊर्जावान देशभक्त और त्यागी सन्यासी के रूप में अपने व्यक्तित्व और आचरण का अतुलनीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। असीम ऊर्जा निरंतर प्रयास और भारत की आत्म शक्ति को स्वामी विवेकानंद ने सम्पूर्ण विश्व के समक्ष एक मानवीय जीवन पद्धति के रूप में प्रस्तुत किया जो विश्व शान्ति और सौहार्द्र के लिए आज भी आवश्यक है। इसलिए स्वामी विवेकानंद की वाणी सर्वकालिक और सार्वभौमिक है। उत्पीड़न, अज्ञान, अशिक्षा, गरीबी, शोषण और निरंतर युद्ध की आशंका से घिरे विश्व को स्वामी विवेकानंद के दर्शन, शक्ति और ऊर्जा दे सकता है और धरती पर राम राज्य की कल्पना साकार हो सकती है। यही कारण है कि विश्व में हर कही आज भी स्वामी विवेकानन्द के व्यक्तित्व और कृतित्व का अध्ययन एवं शोध जारी है।

References

1. Chakraverti Rajgopal (1999) Swami Vivekanand in India, Motilal Banarsidas Publication **(1999)**

2. Burke Merie Louise (1985) Swami Vivekanand in the West **(1985)**

3. Miller Trimothy (1995) The Vedant Movement & Self realization, Albany New York **(1995)**